13 / 01 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सवदर्शन चक्रधारी सो चक्रवर्ती
राज्य भाग्य अधिकारी की अनुभूति

➢➢ मैं सवदर्शन चक्रधारी आत्मा हूं

➳ _ ➳ 84 जन्मों के चक्र में

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने 84 भिन्न-भिन्न पार्ट बजाएं हैं

➳ _ ➳ इस चक्र के अंदर हीरो पार्ट बजाने वाली

➳ _ ➳ मैं हीरोपार्ट धारी आत्मा हूं

→ अपने इस ईश्वरीय जन्म से

→ मैं आत्मा सारे कलप के अंदर विशेष बनती हूं

◆ आदि से अंत तक का राज़

◆ बाप द्वारा जानने वाली

◆ मैं मास्टर नॉलेज फुल आत्मा हूं

➳ _ ➳ पिता और माता के साथ सारा ही कल्प में

➳ _ ➳ मुझ आत्मा ने भिन्न भिन्न पाट बजाया है

→ पूरा ही कल्प प्रीत की रीत निभाने वाली

◆ मैं भाग्यवान आत्मा हूं

➢➢ इस देह के पिंजरे को छोड़

➳ _ ➳ मैं आत्मा उड़ चली परमधाम की ओर

→ शांति के सागर के समीप

◆ संपूर्ण संपन्न स्थिति का अनुभव कर रही हूं

◆ मुझ आत्मा को हीरे तुलय बनाने वाले

◆ पतित से पावन बनाने वाले

● प्यारे शिव बाबा को धन्यवाद करती हूं

● और बाबा की अनंत किरणों में

● अथाह स्नेह का अनुभव कर रही हूं

➢➢ सुखधाम की अनुभूति

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस संपन्न स्थिति में

➳ _ ➳ सृष्टि के आदि काल में

➳ _ ➳ स्वर्णिम युग में ,इस धरा पर आती हूं

→ मैं दिव्य रूप धारी देवी हूं

◆ सर्वगुण संपन्न

◆ 16 कला संपूर्ण

◆ डबल ताजदार

◆ मैं आत्मा राज्य भाग्य की अधिकारी हूं

● चारों और संपूर्ण सतोप्रधानता है

➳ _ ➳ यह सतयुग है

➳ _ ➳ जहां संपूर्ण सुख ही सुख है

→ हर आत्मा संपूर्ण पवित्र है

◆ अथाह धन संपदा चारों और है

➳ _ ➳ विश्व महाराजन श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के राज्य मे

→ मैं राजघराने की श्रेष्ठ आत्मा हूं

→ आधा कल्प संपूर्ण सुख में

→ मैं आत्मा इस सृष्टि पर हूं

➢➢ अब पुनः इस ब्राह्मण जीवन की स्मृति में

➳ _ ➳ मैं आत्मा लौटती हूं

➳ _ ➳ मेरा यह ईश्वरीय जन्म

➳ _ ➳ देवताओं से भी उत्तम है

→ इस एक जन्म में

→ परमात्मा का हाथ मेरे हाथ में है

→ और अपने आदि से अंत तक के

→ विशेष पार्ट को मैं जानती हूं

◆ इस संगम युग का एक- एक पल

◆ एक- एक श्वास बाप की याद में बिताकर

● सफल कर रही हूं

● यह मेरा अमूल्य ईश्वरीय जन्म है